nwda.gov.in

आठ साल में साफ होने के बजाय और मैली हो गई यमुना : रिपोर्ट

■ विशेष संवाददाता, नई दिल्ली

यमुना को साफ करने के दावों के इतर एक चौंकाने वाली रिपोर्ट आई है। इस रिपोर्ट में दावा किया गया है कि आठ वर्षों में राजधानी में यमुना साफ होने की बजाय प्रदूषित हुई है। एनजीटी के आदेश पर यमुना के लिए गठित उच्चस्तरीय कमिटी की पहली मीटिंग में डीपीसीसी व पर्यावरण विभाग ने यह रिपोर्ट जारी की। उच्चस्तरीय कमिटी की पहली मीटिंग 14 जनवरी को आयोजित हुई थी, जिसकी अध्यक्षता एलजी वी. के. सक्सेना ने की थी। कमिटी का गठन 9 जनवरी को किया गया है।

इस रिपोर्ट में बताया गया है कि पिछले आठ सालों के दौरान दिल्ली सरकार के प्रयासों के बावजूद यमुना में प्रदूषण दोगुना तक बढ़ गया है। राजधानी में यमुना पल्ला से दाखिल होती है। यहां पर 2014 में बीओडी (बायोलॉजिकल ऑक्सिजन डिमांड) 2 था। वहीं ओखला बैराज पर यह बढ़कर 32 हो गया। वहीं 2023 में पल्ला में बीओडी का स्तर 2 ही है, लेकिन ओखला में यह बढ़कर 56 हो गया है। एलजी ऑफिस के अधिकारियों के अनुसार, 2014 से राजधानी में यमुना में प्रदूषण हर साल बढ़ा है। महज 2019 इसका अपवाद रहा है। 2019 में यमुना कनाल के रिपेयर होने की वजह से हथिनीकुंड बैराज से यमुना में चार गुना तक पानी छोड़ा गया था, जिससे यमुना के प्रदूषण स्तर में कमी आई थी और प्रदूषक बह गए थे। अधिकारियों के अनुसार, बढ़ते प्रदूषण की वजह यह है कि इस दौरान सरकार नजफगढ़ ड्रेन में प्रदूषण कम करने में नाकाम रही है। जबकि इसे कंट्रोल करने के आदेश एनजीटी और सुप्रीम कोर्ट ने भी दिए हैं।

FILE

ओखला में बीओडी लेवल दोगुना बढ़ा, यमुना के प्रदूषण की सबसे प्रमुख वजह नजफगढ़ ड्रेन

नजफगढ़ नाले ने बिगाड़ा काम

2014 में आईएसबीटी में बीओडी का स्तर 26 था। आईएसबीटी से ठीक पहले नजफगढ़ नाला यमुना में गिरता है। 2017 में यह बढ़कर 52 हो गया। मौजूदा समय में भी यहां बीओडी का स्तर 38 है। यमुना के प्रदूषण में नजफगढ़ नाले की हिस्सेदारी 68.71 प्रतिशत है। इसके बाद दूसरे नंबर पर शाहदरा नाला आता है। जिसकी वजह से यमुना में 10.90 प्रतिशत प्रदूषण है। इतने प्रदूषण के बावजूद इन नालों को साफ नहीं किया गया है। नजफगढ़ नाले में अब भी कई ड्रेन से अनट्रीटेड सीवर आ रहा है।

NBT नजरिया

नदियों का प्रदूषण दूर करने के लिए जन आंदोलन की जरूरत है। आम लोगों का ऐसा समूह जो सारी सरकारी एजेंसियों के कामकाज की समीक्षा करता रहे क्योंकि यह तो साफ हो चुका है कि अदालत और एनजीटी भी इस मामले में ज्यादा कुछ कर नहीं पा रहे। यमुना गंदी इसलिए है क्योंकि प्रदूषणकारी उद्योगों की लॉबी बहुत पावरफुल है। उन पर कड़े एक्शन नहीं हो पाते। सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट भी खराब है। राजनीतिक मतभेद ऐसे हैं कि सरकारें मिलकर काम ही नहीं करना चाहतीं। ऐसे में लोगों को ही समझना होगा कि जीवनदायी नदियां आने वाली पीढ़ियों के लिए कितनी जरूरी हैं।

35 में से 9 STP मानकों पर खरे

रिपोर्ट में दावा किया गया है कि राजधानी में 35 में से 9 एसटीपी (सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट) ही मानकों पर खरे हैं। इसका मतलब यह है कि इन एसटीपी से जो 530 एमजीडी सीवेज साफ किया जा रहा है उसमें से सिर्फ 145 एमजीडी पानी ही प्रदूषण रहित है। राजधानी में प्रतिदिन 786 एमजीडी सीवेज उत्पन्न होता है। जबकि यहां एसटीपी की कुल क्षमता 530 एमजीडी है। जबकि यह एसटीपी अपनी क्षमता का 69 प्रतिशत ही काम करते हैं। ऐसे में यह महज 365 एमजीडी सीवेज को ट्रीट करते हैं।